उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड फेडरेशन - थिऑसोफिकल सोसाइटी
पत्रक

Vol 14 अक्टूबर - दिसम्बर 2021 No. 1

वर्ष 2021-22 का मुख्य विषय - 'बिना प्रतिरोध करते हुए प्रतिरोध करो'

'एक जीवन के अंदर एक जीवन'

मन का एक गुण होता है जिस पर लोगों का कम ध्यान जाता है और वह गुण जीवन के अंदर कोई ऐसी चीज है, उससे संबंधित है। कई आयामों में यह हमारे सामान्य बहिर्मुखी जीवन से गुणवत्ता में अलग होता है। ज़ेन बुद्धिज्म में एक अभिव्यक्ति है 'विशेषज्ञ के मन के लिए बहुत कम विकल्प होते हैं। नौसिखिया के मन के लिए अनेक विकल्प होते हैं।' मन जो प्रशिक्षित है और अपने कुछ विशेष विचारों से जुड़ कर संस्कारग्रस्त है उसमें वह वास्तविकता के सन्दर्भ में विकल्प सीमित जैसा हो जाता है। किन्तु हम सभी समय में वापस जा सकते हैं, यहां तक कि अपने युवा काल में, एक नौसिखिये के मन की स्थिति में। जब हम खुले होते हैं और उस समय संस्कार मुक्त होते हैं उस समय वह मन नई चीज़ों को सीखने वाला, कुछ चीज़ों को अपनी ताज़ी आँखों से पहली बार देख रहा है, तब विकल्पों की सम्भावना बहुत होती है या यों कहें कि अंतहीन होती है।

एक बोधि युक्त दृष्टि सभी में मूल रूप से है। एक सार्वभौमिक साझी बोधि (intuition) है। यह स्वयं में एक सिद्धांत नहीं है। इस पर किसी वैज्ञानिक प्रमाण की कोई मुहर नहीं है। किंतु यह सार्वभौमिक साझा किया हुआ गहरा जानना है कि हममें से प्रत्येक कुछ अधिक, कुछ महानतर के हिस्से हैं। हम उसको महानतर जीवन कह सकते हैं और वह ऐसी चीज है जिसको हमसे अलग नहीं किया जा सकता, चाहे वह वैज्ञानिक ढंग से प्रमाणित किया जा सके या नहीं - एक आंतरिक जीवन कुछ ऐसी चीज है जिसको नकारा नहीं जा सकता। हम में से सभी सोचते हैं अनुभव करते हैं देखते हैं सुनते हैं लेकिन हम लोग अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग अंश तक यह सब काम करते हैं।

सूचना (information), ज्ञान (knowledge), समझ (understanding) और प्रज्ञा या बुद्धिमत्ता (wisdom) में स्पष्ट भेद है। कभी हम या अनुभव करते हैं कि ज्ञान सभी दूसरी चीजों के लिए द्वार हैं हालांकि इसका गहरा महत्व है लेकिन हम दूसरों के ज्ञान से ज्ञानवान बन सकते हैं किंतु हम दूसरों की बुद्धिमत्ता से बुद्धिमान नहीं बन सकते। बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा, ज्ञान से एक बिल्कुल अलग स्तर की चीज है। प्रज्ञा वास्तविकता का एक अनुभव होता है जिसको हमें बताने के लिए वे लोग आते हैं जिन्हें हम आध्यात्मिक गुरु कहते हैं। वह हमें हमारी भाषा में इसको बताने का प्रयत्न करते हैं। बाइबल, महाभारत, भगवद गीता में इसको कुछ कहानियों की भाषा में बताने का प्रयत्न किया गया है जो हमारे

किसी अंदर के स्तर को स्पर्श करती है जो हमें अधिक गहराई के विचार की ओर ले जाती है। ज्ञान के श्लोक जो ब्लावट्स्की की पुस्तक सीक्रेट डॉक्ट्रिन का आधार है - उसमें परियों की कहानी जैसी भाषा में एक कथन है 'शाश्वत माता-पिता अपने सर्वदा अदृश्य वस्त्रों में लिपट कर सात शाश्वत अवधियों के लिए एक बार फिर सो गए हैं।' यह कथन एक बहुत ही सुंदर छवि प्रस्तुत करता है। ऐसी छवि में हम बच्चों से कहानियां साझा करते हैं। यह छवि संसार के बनने के पहले के कुछ अवर्णनीय स्थिति का वर्णन करने का प्रयत्न है। यह भाषा कुछ गुह्य चीज को बताने का प्रयत्न है।

हम सभी के अंदर मुख्यतः दो आयाम हैं - आंतरिक और बाहरी। इन दोनों के बीच विभाजन चुनौतीपूर्ण होता है जो अलग-अलग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग स्तर पर होता है। अपने निचले स्तर पर हम दुनियादारी के मामलों में लगे रहते हैं. लेकिन हम एक निश्चित अभ्यास द्वारा दुनिया के हलचलों के बीच भी शांति और स्थिरता का अनुभव कर सकते हैं जब हम अपने अधिक गहरे या अंतरीय स्तर की चेतना, बोधियुक्त दृष्टिकोण से जुड़ते हैं। एक ऐसी अवस्था आती है जब मन के विभिन्न स्तरों के कोलाहल और भाव निस्तब्ध हो जाते हैं और अंत में हम नीरवता में पहुंच जाते हैं।

ऐसी अवस्था आती है जब हम अपने को किसी लोक कल्याणकारी कार्य में लगाते हैं जिसमें परेशानियां और अवरोधों के आने पर भी विचलित नहीं होते हैं। कोई ऐसा नहीं होगा जो दयालुता, सत्यता, मित्रता और गैर- आलोचनात्मकता पसंद न करे। प्रत्युत्तर अलग अलग हो सकता है। इन चीजों का कोई भौतिक मूल्य नहीं होता है।

हमारा हर एक कार्य, विचार, और भावना दूसरों को प्रभावित करते हैं। बाहर की चीजें हमारे प्रयत्न को हल्का या कम नहीं कर सकतीं । इसलिए चाहे थिऑसोफिकल सोसाइटी के अंदर हो या उसके बहार, मानवता के विश्व बंधुत्व के प्राणि- केंद्र बनने की संभावना हर जगह है। इसलिए हमें प्रयत्न करना है। हम इस संसार में इसीलिए हैं कि हम यह जाने कि हम एक हैं, सारा जीवन एक है। इस समझ के आधार पर हमारा दृष्टिकोण जब बदलता है तो उससे सभी प्राणियों का भला होता है और इस मार्ग पर जीवन का यही उद्देश्य है। यह ऐसा काम है जो अंतहीन है, जन्म से जन्म तक चलने वाला है। हम अपने हिस्से का योगदान करें और इसके लिए हम कृतज्ञ हों।

(बंधु टिम बॉयड अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा 146वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन के समापन पर दी गई वार्ता से कुछ बिंदु)

विशेष क्रिया कलाप

- आठ लॉजों - लखनऊ के धर्म और प्रज्ञा, कानपुर का चोहान, गोरखपुर का सर्वहितकारी, गाज़ियाबाद का प्रयास, नोएडा, इलाहबाद का आनंद, वाराणसी का काशी तत्त्व सभा ने ऑनलाइन

बैठकें की। इन लॉजों में उस लॉज के बाहर के तथा फेडरेशन के बाहर के कुछ वक्ताओं ने भी वार्ताएं दीं। आगरा के निर्वाण लॉज ने भौतिक रूप से बैठकें शुरू कर दिया।

- **फेडरेशन स्तर पर** - दि 2 - 3 अक्टूबर 2021 फेडरेशन का 102 वां वार्षिक अधिवेशन ऑनलाइन आयोजित हुआ। दि 3 अक्टूबर 2021 को वर्ष के मुख्य विषय 'संसार में रहो, किन्तु संसार के नहीं' पर एक गोष्ठी आयोजित हुई।
  - दि 17 नवंबर 2021 को थिऑसोफिकल सोसाइटी का स्थापना दिवस मनाया गया।
  - 'थिऑसॉफी की मूल बातें' से सम्बंधित एक वार्ता की श्रृंखला शुरू की गई। श्रृंखला में पहली वार्ता 'कर्म का नियम' पर बंधु उमाशंकर पाण्डेय द्वारा दि 5 दिसंबर 2021 को दी गई।

लॉजों द्वारा विशेष कार्यक्रम

- कई लॉजों ने दि 1.10.2021 को डॉ एनी बेसेन्ट का जन्मदिन मनाया। काशी तत्त्व-सभा (वाराणसी) ने बंधु ज्ञानीश कुमार चतुर्वेदी द्वारा इस दिन एक सार्वजनिक वार्ता का आयोजन किया।
- गाजियाबाद के प्रयास लॉज में बच्चों और युवाओं के लिए प्रत्येक रविवार प्रातः अध्ययन कक्षा चलाई गई जिसमें 'मंत्रयोग', 'ध्यान', 'प्रायोगात्मक और प्रश्नात्मक वृत्ति', 'अनुशासन', 'दैनिक जीवन में सेवा की वृत्ति' तथा 'देने का महत्त्व' विषय लिए गए।

अन्य फेडरेशनों में योगदान/वार्ताएं

उत्कल, दिल्ली, बॉम्बे, गुजरात तथा मप्र/राजस्थान फेडरेशन के कुछ लॉजों में बंधु उमाशंकर पाण्डेय, शिखर अग्निहोत्री, शिवकुमार पाण्डेय, बहन विभा सक्सेना, शुभ्रलीना मोहंती और वसुमती अग्निहोत्री द्वारा अलग-अलग विषयों पर वार्ताएं दी गईं।

भारतीय शाखा के कार्यक्रम में भागीदारी

- बहन विभा सक्सेना ने एनी बेसेन्ट द्वारा लिखित पुस्तक 'मनुष्य और उसका शरीर' का दि 23 और 30 अक्टूबर तथा 6 नवम्बर 2021 को तीन सत्रों में अध्ययन कराया।
- बहन विभा सक्सेना द्वारा दि 12.11.2021 को 'महात्मा के पत्र - 1' विषय पर; बंधु शिखर अग्निहोत्री द्वारा दि 7.11.2021 को 'थियोसोफिकल कार्य के सिद्धांत' विषय पर और दि 19 और 26 नवंबर 2021 को दो सत्रों में 'महात्मा के पत्रों' विषय पर; बहन शुभ्रलीना मोहंती द्वारा दि 12.12.2021 को 'थिऑसोफिकल प्रशिक्षण केंद्र का कार्य' विषय पर; बंधु अजय राय द्वारा दि 19.12.2021 को 'ध्यान के समय ऊर्जा-साँचा और जैवीय-रासायनिक परिवर्तन' विषय पर वार्ताएं दिया।
- बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने दि 23, 24, 25, नवंबर 2021 को शिर्ले निकोलसन द्वारा लिखित पुस्तक Ancient wisdom, modern insight पर एक तीन-दिवसीय अध्ययन कार्यक्रम का संचालन किया।

भारतीय शाखा के वार्षिक अधिवेशन में दि 27.12.2021 को अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष बंधु टिम बॉयड द्वारा अंग्रेजी में दिए गए उद्घाटन संबोधन का बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने साथ-साथ हिंदी में अनुवाद किया। दि 30.12.2021 को बहन श्रीयशी ओझा द्वारा 'परे देखो और थिऑसोफिकल सोसाइटी का प्रथम उद्देश्य' विषय पर और बहन विभा सक्सेना द्वारा 'केंद्र सर्वत्र परन्तु परिधि कहीं भी नहीं' विषय पर संक्षिप्त वार्ताएं दी गयीं।

ऑनलाइन अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम में भागीदारी

बहन विभा सक्सेना ने दि 23.10.2021 को फिलीपींस शाखा के संयुक्त बैठक में 'मनुष्य अपने को जानो' विषय पर वार्ता दिया; बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने एडमंड लॉज मास्को द्वारा 'सीक्रेट डॉक्ट्रिन के छंद-1 श्लोक-8 और श्लोक 9' पर दि 30.10.2021 और दि 20.11.2021 को आयोजित गोष्टी में एक पैनलिस्ट और वक्ता के रूप में योगदान दिया ।

थिऑसोफिकल सोसाइटी के स्थापना के 146वे वर्ष के उपलक्ष में एडमंड लॉज मास्को ने 5वें अंतर्राष्ट्रीय थिऑसोफिकल कांग्रेस का आयोजन किया जिसमें बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने दि 28.11.2021 को पूर्वान्ह में 'सत्य क्या है?' विषय पर वार्ता दिया तथा उसी दिन संध्या को 'सीक्रेट डॉक्ट्रिन के छंद-1 श्लोक-4' पर आयोजित गोष्ठी में वार्ता दिया। उन्होंने वर्ल्ड यूनाइटेड संस्था द्वारा 'वैश्विक रूपांतरण उत्सव 2021' के कार्यक्रम में दि 19.12.2021 को 'दिव्य प्रज्ञा और विज्ञान' विषय पर वार्ता दिया।

थिऑसोफिकल सोसाइटी के 146वें अंतरराष्ट्रीय सम्मलेन में योगदान - बंधु शिखर अग्निहोत्री ने अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय अड्यार में रहकर सत्रों के ऑनलाइन प्रबंधन में सहयोग किया। बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने विदेशी वक्ताओं द्वारा अंग्रेजी में दिए गए 8 वार्ताओं का हिंदी में साथ-साथ अनुवाद किया।

फेडरेशन द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी तथा बुलेटिन, पुस्तक-पत्रिकाओं की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने हेतु https://theosophy-upuk.in पर निःशुल्क सब्सक्राइब करें।

संकलन/सम्पादन
उमाशंकर पाण्डेय, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड फेडरेशन
सहयोग: राजेश गुप्ता, धर्म लॉज, लखनऊ